अनोखी कहानियां

रहस्यमयी गुफ़ा

सुरेखा नवरत्न

आलोक प्रकाशन

लेखिका- –सुरेखा नवरत्न
(Assi. Teacher)

रहस्यमयी गुफ़ा

(अनोखी कहानियाँ)

C-2021

आलोक प्रकाशन

प्रिय पाठकों,

सादर अभिवादन,

मेरी पिछली कहानी संग्रह को आप लोगों का भरपूर आशीर्वाद और स्नेह मिला | कहानियाँ किसी भी प्रकार की हो, चाहे वो मार्मिक कहानियाँ, सच्ची कहानियाँ, रोचक कहानियाँ जो भी हो , मनोरंजन के साथ -साथ कोई न कोई सीख अवश्य मिलता है | इस बार मैं आपके लिए एक मनोरंजक अनोखी कहानियों का संग्रह लेकर आई हूँ | इस संग्रह की सारी कहानियाँ पूर्णतः काल्पनिक है | इसमें रहस्य भी है, रोमांच भी है, कुछ डरावनी तो कुछ दिलचस्प भी है | इस संग्रह के सभी कहानियाँ और पात्र पूरी तरह से काल्पनिक है अगर इत्तफ़ाक से कोई चरित्र किसी से मिलती -जुलती है तो यह केवल संयोग है, कहानी का उद्देश्य पाठकों के लिए केवल मनोरंजन करना है | मुझे उम्मीद है यह संग्रह आपको अवश्य पसंद आएगी | मैं आलोक प्रकाशन का आत्मीय आभार व्यक्त करती हूँ श्री शुक्ला सर जी ने हिन्दी के नये लेखकों को अपने संपादन में स्थान देकर अमूल्य उपहार दिया है |

आभार

-सुरेखा नवरत्न

अनुक्रमणिका

1.रहस्यमयी गुफ़ा... ....,...,.... 5-9

2.पुल के उस पार.... . ,... 10-17

3.तीसरा कमरा... .. .. ,... 18-24

4.चमत्कारी पत्थर.... .. ..,... 25-30

5.मैना बन गई लड़की..... 31-42

6.बरगद की भूतनी... 43-46

7.डायन बहु... 47-53

8.दिव्य पुरुष.... 54-57

9.सन्नाटा.. 58-65

10.परियों का देश..... 66-69

11.वन की देवी... 70-75

12..खंडहर की चुड़ैल.... 76-84

13.परिचय... 85

1.रहस्यमयी गुफ़ा

एक समय की बात है।सहसपुर नामक राज्य में, सहसार्जुन नाम का राजा राज्य करता था।वह बहुत ही बुद्धि मान और पराक्रमी था ।उसके राज्य में किसी भी चीज़ की कमी नहीं थी ,प्रजा बहुत सुखी थी।राजा भी खुश थे ।

राजा सहसार्जुन के मन में शिकार खेलने जाने का विचार आया।उसनें मंत्री को कुछ दिन के लिए राज्य का दायित्व सौंप कर शिकार के लिए जंगल की ओर घोड़े पर सवार होकर ,अकेले ही निकल पड़े।चलते-चलते वह घनघोर जंगल में जा पहूँचा।राजा के हाथों कोई भी शिकार नहीं आया ।शाम हो चुकी थी।राजा बिना शिकार किए वापस नहीं आने वाला था। उसनें निश्चय किया की आज की रात्री मैं इसी वन में विश्राम करूँगा |

राजा को वही पर एक गुफा दिखाई दिया । राजा ने अपना घोड़ा एक पेड़ में बांध दिया और

गुफा के अंदर प्रवेश किया । अपना तीर - धनुष सिरहाने रखकर विश्राम करने लगा । शुक्ल पक्ष और अष्टमी की रात थी । जिसके कारण जंगल में चंद्रमा की मध्यम रोशनी फैली हुई थी । गुफा में भी हल्का सा प्रकाश आ रहा था । गुफा बहुत बड़ा था । कुछ समय के पश्चात् राजा की आंख लग गई ।

आधी रात को अचानक एक रहस्यमयी आवाज सुनाई देने लगी । राजा की

आंख खुल गई।राजा को लगा की कोई स्त्री कुछ कह रही है।कुछ समय पश्चात पुनः वही आवाज सुनाई देने लगा।राजा को समझते देर नहीं लगा।स्त्री ने इस बार और अधिक ऊंचे आवाज में कहा- ऐ ! आराम करते हुए मुसाफ़िर राजा सहसार्जुन ! मुझे यहाँ से बाहर निकालो।तीन सौ वर्ष से मैं यहाँ क़ैद हूँ।मुझे यहाँ से बाहर निकालो।

राजा ने जैसे- तैसे वहाँ रात गुजारा और तड़के ही वहाँ से अपने गुरूजी के आश्रम जा पहुंचा।उसने गुरूजी को सारी बातें बताई।गुरूजी ने राजा को बताया कि आज से तीन सौ वर्ष पूर्व दक्षिण देश के राजा सूरसेन ने किसी पराई स्त्री के वश में आकर अपने पत्नी को गुफा के दीवार पर जिंदा चुनवा दिया था।

तबसे उसकी आत्मा उस गुफा और जंगल में भटकती है अगर कोई नेक और धर्मात्मा व्यक्ति उसके ऊपर गंगा मैया का पवित्र जल छिड़क देगा तो रानी का आत्मा मुक्त हो जाएगा । इतना सुनते ही, राजा अपने घोड़े पर चढ़कर सौ कोस की लंबी दूरी तय करके गंगा नदी के पास पहुंचा ।उसने अपने कमंडल में गंगा नदी का पवित्र जल भरा और सीधे उस घनघोर जंगल में गुफा के पास पहुंचा ।उसनें पवित्र गंगा जल गुफा के उस दीवार पर छिड़का ।रानी की आत्मा वहाँ से मुक्त हो गई ।उसनें राजा सहसार्जुन को प्रणाम कर धन्यवाद किया और स्वर्ग की ओर प्रस्थान कर गई ।

राजा सहसार्जुन को बहुत प्रसन्नता हुई आज फिर उसनें एक नेक काम किया |

2.पुल के उस पार

बहुत दिनों बाद मोहन अपनी पुरखों का गाँव आया हुआ था , मोहन बचपन से ही बहुत प्रतिभाशाली था | पढ़ाई लिखाई में उसकी खास रूचि थी | इसीलिए आठ साल के उम्र में ही उसे पढ़ाई करने के लिए विदेश (अमेरिका) भेज दिया गया था | असल में अमेरिका में उनकी छोटी बुआ रहती है बुआ ने अब तक शादी नहीं की है, उनका अपना परिवार नहीं है, लेकिन धीरे- धीरे मोहन बुआ के लाडले बन गए हैं | बुआ अब उसे ही अपनी औलाद से बढ़कर प्यार करती है | उनकी पढ़ाई का खर्च, देखरेख सब वही करती रही, उसे गाँव आने ही नहीं देती | मोहन की डाक्टरी की पढ़ाई अब पूरी हो चुकी है, नौकरी

ज्वाइन करने से पहले अपने देश और माता-पिता से मिलने के लिए वह गाँव आया | घर में माता- पिता भाई-बहन और रिश्तेदार, मोहन को इतने दिनों बाद देखकर बहुत खुश हुए | जंगल और पहाड़ों की गोद में बसा वह छोटा सा गाँव बहुत खूबसूरत लग रहा था | चारों तरफ़ मनोरम हरियाली, शांत वातावरण , न किसी परिवहन की आवाज न कहीं कारखाने और फैक्ट्री का शोर | शुद्ध प्राकृतिक ठंडी हवा | वाह! क्या कहने ! सप्ताह का छः दिन बीत चुका था | गाँव के पास से होकर एक छोटी सी नदी गुजरती थी, मोहन को नदी के किनारे घूमने जाने की ईच्छा हो रही थी | मोहन टहलने के लिए निकलने ही वाला था कि उनके दादाजी लखन सिंह वहाँ आ पहुंचा, दादाजी बोले - चलो मैं भी तुम्हारे साथ चलता

हूँ | मोहन अपने दादाजी के साथ नदी के किनारे टहलने चला गया | दादाजी उसे गाँव के बारे में बहूत सारी रोचक बातें बताने लगे | अचानक उसनें नदी पर बनी उस पुल की ओर देखा, तभी उसे सफेद साड़ी पहने एक बुढ़िया दिखाई दिया | उसनें दादाजी से कहा- दादाजी , क्या आपने देखा! मैंने अभी- अभी पुल के उस पार एक बूढ़ी औरत को देखा | दादाजी ने कहा - नहीं बेटा! मैंने किसी बूढ़ी औरत को नहीं देखा? चलो अब यहाँ से चलते हैं शाम हो चुकी है | रात होने पर उस पुल के पार एक चुड़ैल निकलती है जिसके डर से गाँव का कोई भी व्यक्ति नदी के आसपास इस ईलाके में नहीं आते हैं | इसलिए शाम के समय जंगल में ज्यादा समय तक रहना उचित नहीं है | ऐसा कहकर दादाजी उसे घर वापस ले

आता है | मोहन को उसके दादा जी के चुड़ैल वाली कहानी पर जाने क्यूँ यकीन नहीं हो रहा था | रास्ते में मोहन उस बूढ़ी औरत के बारे में पूंछता रहा लेकिन दादाजी ने उसे कुछ भी नहीं बताया | मोहन को उस बूढ़ी औरत को देखकर ना जाने क्यूँ अपनी दादी की याद आ रही थी, मैंने दूर से देखा था वह मेरी दादी की तरह लग रही थी | कहीं वह मेरी दादी तो नहीं है घर के लोग बताते हैं कि मेरी दादी को मरे तो बीस साल हो चुके हैं | राहुल , रात में ठीक से सो नहीं सका | जैसे- तैसे रात कटी और वह करीब चार बजे ही हल्के अंधेरे में, एक टार्च रखा और चल दिया जंगल की ओर | वह सीधे पुल के उस पार बनी उस छोटी सी झोपड़ी के पास गया, वहाँ का दृश्य देखकर उसका दिल दर्द से भर गया |

एक बीमार और बूढ़ी कमजोर औरत जमीन पर चिथड़े बिछाकर सोई हुई है | उसके हाथ और पैरों में सफेद धब्बा लगा हुआ है, उनकी साड़ी जगह -जगह से फटी हुई है | मोहन ने उसे छुकर जगाया, दादी उठो, दादी उठो! बूढ़ी औरत उसे देखकर पीछे सरक गई | बीस साल से कोई इंसान उसके इतने करीब कभी नहीं आया था , बेटा मेरे पास मत आओ! मैं छूत के रोग से पीड़ित हूँ, तुम्हें भी यह रोग लग जाएगी | पिछले बीस साल से लोगों के भलाई के लिए मुझे गाँव से बाहर रखा गया है | साल भर में एक बार गाँव के मुखिया,मेरे पति लखनसिंह के द्वारा राशन लाकर उस टीले के पास दूर में रखवा दिया जाता है | मोहन को समझते देर नही लगी, कि यह उनकी दादी ही है, वह अपने दादी के पैर छूकर

प्रणाम किया और उसके बहुत मना करने के बावजूद भी दादी को अपने साथ घर ले आया | बूढ़ी दादी को मोहन के साथ देखकर गाँव के लोग आश्चर्य हो गए | घृणित और क्रोधित होकर सभी लोग मोहन को भला बुरा कहने लगे | उस बीमार बूढ़ी औरत को तुरंत पुल के उस पार पहुँचाया जाए नहीं तो पूरे गाँव वासी लखन लाल के परिवार को अकेला छोड़ देंगे या फिर मोहन को भी गाँव से बाहर निकाल दिया जाए | पूरा परिवार बहुत मुसीबत में फंस गया, बीस साल बाद एक बार फिर उसे इस समस्या का सामना करना पड़ रहा है | मोहन ने गाँववालों से कहा - तुम लोग कितने निर्दयी और कठोर हो, मेरी दादी कोई चुड़ैल नहीं है यह बीमार है, और अब यह बीमारी असाध्य नहीं है इसे ठीक किया जा सकता

है | ठीक है मैं यहाँ नहीं रहूंगा, अपने दादी के साथ रहकर उसका ईलाज करूँगा | मैंने इतने वर्षों से जो विदेश में रहकर पढ़ाई किया है अब इसका सदुपयोग करने का सही समय आ गया है | ऐसा कहकर मोहन अपने दादी को लेकर पुल के उस पार चला जाता है, उसनें विदेश जाने का विचार त्याग दिया | अपने दादी के साथ -साथ उस क्षेत्र के जितने भी पीड़ित रोगी थे सबका ईलाज करने लगा |मोहन की दादी अब पूरी तरह से स्वस्थ हो गई है धीरे -धीरे वहाँ पर कुष्ठ रोगियों का अस्पताल खुल गया, मोहन नि:शुल्क

सबका ईलाज करता है | अब तक कितने रोगियों को वह ठीक कर चुका है | उसके अस्पताल को पुल के उस पार का अस्पताल के नाम से जाना जाता है....

3.तीसरा कमरा

दो मंजिला आलीशान मकान, अटारी वाली डिजाइन | चारों तरफ़ कमरों से घिरा हुआ और मध्य में बड़ा सा आंगन | बेहद खूबसूरत मिनारें और कंगूरा बना हुआ था | ऐसा लग रहा था मानों किसी राजा का महल हो | कमी थी तो बस बिजली की , उसकी आवश्यकता भी केवल रात्रि में थी | दिन तो जैसे- तैसे कट जाती थी मगर

दिन भर सूरज की तेज रोशनी में तपने के बाद घर का तापमान रात में बढ़ जाता था | सुरूची का पूरा परिवार ससुर जी के रिटायरमेंट के बाद गाँव आया था | उस समय गाँव में बिजली नहीं लगी थी, लालटेन की रोशनी से काम चलाना पड़ता था | दोपहर की तेज़ धूप में पूरा छत और आंगन तवे के समान तप रहे थे | सुरूची को इस तरह बिना पंखे की रहने की आदत नहीं थी, जब से पैदा हुई है शहर में ही रही | अब अचानक से शादी के बाद गाँव में रहना पड़ गया |

घर में सभी लोगों का दिन बड़े मजे से कट रही थी, लेकिन सुरुचि को एक -एक दिन काटना मुश्किल होता था | उस दिन रात के भोजन करने के बाद सभी अपने -अपने कमरे में सोने चले गए | सुरुचि भी अपने कमरे में आराम कर रही

थी, आज मौसम थोड़ा नरम था हल्की बदली छाई हुई थी | खिड़की से ठंडी- ठंडी हवा कमरे के अंदर तक आ रही थी | आशीष (सुरुचि का पति) सो गया था, घर के सभी सदस्य अपने-अपने कमरे में सो रहे थे तभी हवेली के कोने वाली आखिरी कमरे से अचानक धड़ाम की आवाज आई | सुरुचि को लगा जैसे - अरे मैंने तो रसोईघर का दरवाजा अच्छे से बंद कर दिया था,क्योंकि रसोईघर भी उसी तरफ़ थी | शायद ये आवाज वहीं से आई है कहीं जल्दबाजी में मैंने खिड़की बंद करना तो नहीं भूल गया | वह झट से उठकर रसोई की तरफ चली गई, अरे! यहाँ तो सब दरवाजा बंद है | फिर उसकी नज़र तीसरे कमरे की ओर पड़ी कमरे का एक दरवाजा भीतर से खुला हुआ था | वैसे तो उस कमरे में कोई

भी नहीं जाता था, क्योंकि वह अतिरिक्त था | कहीं अंदर का खिड़की भी तो नहीं खुला है यह देखने के लिए सुरुचि भीतर चली जाती है | जैसे ही सुरुचि अंदर गई बाहर का दरवाजा बंद हो गया | खिड़की भी बंद दरवाजा भी बंद ऊपर से घुप्प अंधेरा, मारे डरके सुरुचि के हांथ पांव फूलने लगे | उसनें दरवाजा खोलने की बहुत कोशिश की , लेकिन दरवाजा हिला तक नहीं | सुरुचि को घुटन महसूस होने लगी, और कुछ ही देर में वह सो गई ,शायद बेहोश हो गई | अचानक उस बेसुध अवस्था में उसे एक तीव्र रोशनी दिखाई दिया और एक बहुत बड़ा नागराज उसके सामने प्रकट हो गया | उस नागराज ने मनुष्य के भाषा में सुरुचि से कहा- पुत्री तुम इस घर की बड़ी बहू

हो, मैं अब तक तुम्हारी ही प्रतिक्षा कर रही थी | इस घर के चौथे पीढ़ी के बड़े जमींदार ने मुझे खज़ाने की कलश को तुम्हें सौंपने के लिए कहा था | अब तुम आ गई हो तो इस कलश को मैं तुम्हें सौंपता हूँ | इस धन का दस प्रतिशत गरीबों में बंटवा देना और तुम्हारे सबसे पुरानी पुश्तैनी जमीन में बड़े जमींदार के नाम से एक धर्मशाला बनवा देना | ऐसा कहकर नागराज अंतर्ध्यान हो गया | सुरुचि की आंखें खुली, उसके सामने खज़ाने का एक बड़ा सा कलश पड़ा हुआ था

|कमरे का दरवाजा भी अपने आप खुल गया | सुरुचि ने कलश को प्रणाम किया और दरवाजा बंद करके बाहर निकल गई, कुछ ही देर में सुबह हो गईं | सुरुचि ने सारी बातें घरवालों को बताया | सभी लोग सच जानने के लिए तीसरे कमरे की ओर गए | वहां सोने की मोहरों से भरा खजाने का कलश देखकर सब लोग आश्चर्य हो गए |

सुरूची के ससुर जी ने बताया कि उसके दादा जी के दादा जी अंग्रेजों के जमाने में जमींदार हुआ करता था,उसके पास बहुत धन दौलत था उसी ने अपने आने वाली पीढ़ियों के लिए अंग्रेजों के लूटने के डर से जमीन में अपना खजाना छुपा रखा था |उसके मरने के बाद उसकी आत्मा खजाने की रखवाली करने लगा |ये हवेली भी उसी ने बनवाया था | शायद खजाने का कलश इसी कमरे के जमीन के नीचे रखा था |इस बात को वह मरने से पहले अपने बेटे को बताया था , उसके बेटे ने यानी मेरे परदादा ने उसे निकालने की कोशिश की लेकिन वह उसे निकाल

नहीं पाया और उसे एक सांप ने काट लिया उसके मरने के बाद मेरी परदादी इस हवेली को बंद करके अपने छोटे से बच्चे को लेकर शहर चली गई और फिर हमारी दो पीढ़ी अब तक शहर में ही रही है |बीच बीच में पिताजी घर आया करते थे और हवेली की मरम्मत और साफ सफाई करवाया करता था | शायद यह खजाना तुम्हारे किस्मत में था , यह हमारे पूर्वजों का आशीर्वाद है तुम बहुत ही सच्चे हृदय और किस्मत वाली हो |जैसा नागराज ने कहा है वैसा ही करो सुरूची के कहने पर घरवालों ने नागराज ने जैसा कहा था वैसा ही किया , और सभी खुशी- खुशी रहने लगे |

4.चमत्कारी पत्थर

रामभरोस बहुत ही गरीब था | वह प्रतिदिन एक सेठजी के खेत में मजदूरी करने जाया करता था | एक दिन वह फावड़ा और बेलचा लेकर खेत में मिट्टी हटाने का काम कर रहा था तभी उसके फावड़े में

लगी लकड़ी ढीली हो जाती है | रामभरोस को उसे ठीक करने के लिए पत्थर की आवश्यकता होती है वह आसपास देखता है तो कोई पत्थर दिखाई नहीं देता | रामभरोस कुछ देर नीम के छांव में सुस्ताने लगता है, तभी उसे एक छोटा सा पत्थर दिखाई देता है | वह पत्थर को उठाकर ले आता है और फावड़े को उस पत्थर से ठेसने लगता है | फावड़ा ठीक करने के बाद वह फिर से काम करने लगता है काम खत्म करने के बाद रामभरोस शाम को घर लौट आता है | हाथ मुंह धोकर भोजन करके वह सो जाता है | अगले सुबह काम पर जाने के लिए वह फावड़ा उठाता है ,तो वह सोने का बन गया होता है | सोने की फावड़े को देखकर उसकी आंखें फटी के फटी रह जाती है | रामभरोस को यकीन नहीं हो रहा होता है व, अपने पत्नी रामबती को आवाज देकर बुलाता है अरे ओ भाग्यवान !जरा इधर तो आना !

जल्दी दौड़ कर आना... | रामबती भागती हुई रामभरोस के पास आता है और सोने के फावड़े को देखकर आश्चर्य चकित हो जाती है | रामबती, और रामभरोस दोनों उस फावड़े को लेकर घर के अंदर चले जाते हैं | रामबती अपने पति से पूछती है कि ये कैसे हुआ | रामभरोस अपने पत्नी से कहता है कि कल वह जब खेत में काम कर रहा था तो उनकी फावड़े की लकड़ी ढीली पड़ गई थी, जिसे एक पत्थर से उसनें ठीक किया था और फिर ये ऐसे कैसे हो गया? मुझे नहीं मालूम | रामबती को समझते देर नहीं लगी , वह रामभरोस के साथ खेत चली जाती है | दोनों पति- पत्नी उस पत्थर को ढूंढने लगते हैं , पत्थर रामभरोस को मिल जाता है वे उस पत्थर को लेकर घर लौट आते हैं | रामबती उसे लाकर अपने आंगन में तुलसी के चौरा में रख देती है | स्नान ध्यान करने के बाद वे दोनों उस पत्थर की

पूजा करते हैं और रामबती अपने घर में रखी लोहे के एक औजार को उस पत्थर से स्पर्श करती है और वह औजार सोने में बदल जाती है |

रामभरोस उस सोने के औजार को शहर जाकर सुनार से बेंच आता है और बदले में उसे ढेर सारे रूपये मिल जाती है | जिससे रामभरोस घर में नई -नई सामान खरीद लाता है, और अपने टूटे फूटे मकान को तोड़ कर बहुत बड़े घर बना लेते हैं | रामबती प्रतिदिन घर में रखी धातुओं को उस पत्थर से छूकर सोने में बदलती और रामभरोस उसे शहर जाकर बेंच आता | इस तरह देखते ही देखते कुछ ही दिनों में वे बहुत अमीर बन जाते हैं | अब गाँव के लोगों को यह शक होने लगता है कि रामभरोस को सेठजी के खेतों से गड़ा हुआ धन प्राप्त हुआ है जिससे वह

अमीर बन गया है | कुछ लोग सेठजी के घर जाकर उनके कान भरने लगते हैं जिसमें सेठ रामभरोस के घर आता है और अचानक उसके अमीर होने का राज़ पूंछने लगता है | रामभरोस बहुत ईमानदार इंसान था वह सारी बातें, सेठजी को बता देता है | सेठ उसके तुलसी चौरा में रखे उस चमत्कारी पत्थर को अपने घर ले आता है |

सेठ अपने घर में रखे सारे लोहे, पीतल तांबे के धातुओं को लाकर उस चमत्कारी पत्थर से छूने लगता है लेकिन कोई भी धातु सोने में नहीं बदलता बल्कि सेठजी के घर में रखी सारी सोने -चांदी और हीरे- जवाहरात,पत्थर बन जाते हैं और उस पत्थर से आवाज़ निकलता है ओ सेठजी तुम बहुत लालची हो, तुम्हारे पास बहुत सारे धन दौलत है फिर भी रामभरोस जैसे ईमानदार इंसान

से उसके भाग्य में मिले चमत्कारी पत्थर को छिनकर अपने पास ले आए हो | इसीलिए तुम्हारे सारे धन संपत्ति मामूली पत्थर में बदल जाएंगे | सेठजी सिर पीट- पीटकर रोने लगता है वह उस पत्थर को लेकर रामभरोस को वापस दे देता है और उनसे माफी मांगता है |रामभरोस सोचता है इस तरह से अब अधिक धन का लालसा करना बुरी बात है और वह एक शिव मंदिर का निर्माण करवाता है | मंदिर में उस चमत्कारी पत्थर को स्थापित कर देता है और प्रतिदिन उसका पूजन करने लगता है |

5.मैना

.... बन गई लड़की

एक साहूकार के तीन बेटे थे, रामलाल, मोहनलाल और छोटेलाल | दो बेटों का विवाह हो चुका था | तीसरे बेटे छोटेलाल का विवाह नहीं हुआ था | साहूकार बहुत बूढ़ा हो चुका था इसलिए घर की सारी जिम्मेदारी सबसे बड़ा बेटा रामलाल सम्भालता था | साहूकार ने अपने बड़े बेटे से कहा - बेटा , अच्छे से कन्या देखकर अपने छोटे भाई का भी विवाह करवा दो, जब तक जिंदा हूँ, तीसरे बेटे के औलाद (पोते) का मुंह देख लूंगा | पिता के ईच्छा का मान रखने के लिए रामलाल , छोटेलाल को लेकर लड़की देखने गया |

एक बड़े नगर में साहूकार दंपत्ति रहता था, उनका कोई भी संतान नहीं था लेकिन उन्होंने एक मैना पाल रखा था | साहूकारिन उस मैंना को अपनी पुत्री की तरह प्रेम करती थी | उसकी बड़ी ईच्छा थी कि उसके भी घर में शहनाई बजे | साहूकार के समझाने पर भी उसने अपनी बेटी मैंना की विवाह कराने का फैसला किया | नगर में किसी को पता नहीं था कि उसकी बेटी मैंना

एक चिड़िया है, किसी ने उसे अब तक नहीं देखा

था लेकिन साहूकारनी ने अपने बातों से सबको यकीन दिला रखा था कि सच में उसकी एक बेटी है | जो बहुत ही खूबसूरत है | बहुत लाड़दुलार और अपने शर्मिली स्वभाव के कारण घर से नहीं निकलती है | रामलाल लड़की ढूंढ़ते हुए उसी नगर में साहूकार के घर पहुँच जाते हैं,

साहूकारनी ने खुश होकर उनका स्वागत किया और मैंना को आवाज देने लगी | बेटी मैंना ! बेटी मैंना ! मेहमानों के लिए जरा पानी लेकर आना | तीन बार उसने आवाज दी लेकिन अंदर से कुछ आवाज नहीं आया | साहूकारनी ने मेहमानों को यकीन दिलाने के लिए कहा - मेरी बेटी बहुत ही शर्मिली है, मेरी बेटी मैंना बिल्कुल मेरी तरह दिखती है तुमनें मुझे देख लिया तो

समझो मेरी मैंना को देख लिया | आप लोगों के सामने आने से शर्मा रही है |

उस जमाने में लोग बड़ों के बातों में विश्वास कर लेते थे और लड़की को आमने -सामने देखना जरूरी नहीं रहता था | रामलाल ने अपने भाई की शादी साहूकार की बेटी मैना से तय कर दिया |बैशाख माह के अक्षय तृतीया को विवाह की तिथि तय हुई |दोनों पक्षों में विवाह की तैयारी जोर शोर से होने लगी | आखिरकार विवाह की तिथि भी आ गई | साहूकारनी ने बढ़ई के घर जाकर एक सुंदर मंगरोहन (महुआ के लकड़ी से मानव आकृति) बनवा लिया था | साहूकारनी ने उसी मंगरोहन का नियम के साथ हल्दी तेल और विवाह की सभी रस्म करवाई | नगर वासियों के पूंछने पर लड़की को अस्वस्थ है बता दिया गया

| बाजे -गाजे के साथ बाराती आई, धूमधाम से स्वागत हुआ और विवाह सम्पन्न हो गया | विदाई के समय साहूकारनी ने मैंना को सोने की पिंजरा में बैठा कर उसे डोली में विदा कर दिया | कहारों ने डोली उठाई तो उनको बहुत हल्का महसूस हुआ लेकिन उन्होंने ने किसी से नहीं बताया | डोली सीधे छोटे लाल के कमरे में उतारने के लिए कहा गया था |

छोटेलाल अपने कमरे में आया, और डोली के भीतर झांक कर देखा तो उनके होश उड़ गये | सोने के पिंजरे में मैना बैठी हुई थी | छोटेलाल बहुत निराश हो गया, घर में भैया- भाभियाँ और रिश्तेदार नई दूल्हन को देखने आएंगे तो क्या होगा? यह सोंच कर उसका बुरा हाल हो रहा था | छोटेलाल के आंखों में आंसू आ गए | मैना, छोटेलाल को रोते देखकर बोली - आप मत रोईए जी, अब तो हमारी

विवाह हो चुकी है | किस्मत की रेखा कोई बदल नहीं सकता, हमारे किस्मत में भगवान् ने यही लिखा है | मैना को बात करते देखकर , छोटेलाल को आश्चर्य हुआ | छोटेलाल को मैना पर दया आ गई | उसनें मैना को डोली से बाहर निकाला और अपने पास रख लिया |

छोटेलाल बहुत उदास हो गया, और सुबह होते ही उसनें मैना के लिए पिंजरे में पानी और खाना रख दिया | घर में ताला लगाकर मित्रों के साथ रामायण मंडली चला गया | छोटेलाल दो दिन बाद घर आया, तो भाभियाँ ताने मारने लगीं | कौन सी अप्सरा ब्याह करके लाया है हमें उसका दर्शन भी नहीं करने देते | घर में ताला लगाकर चाबी खुद ही रखते हो | तुम्हारे बीवी को आए तीन दिन हो गये | आज वह रसोई बनाएगी |

छोटेलाल ने कहा -ठीक है भाभी! लेकिन आप लोग उसके खाना बनाते तक घर से बाहर रहोगे | हां! हां ! ठीक है एक न एक दिन तो उसे देख ही लेंगे | ऐसा कहकर भाभियाँ मान गईं,

घर आकर छोटेलाल उदास बैठा था | मैना उसे इस तरह उदास देखकर उसका कारण पूंछा? छोटेलाल ने कहा- कल भाभियों नें तुम्हें रसोई बनाने के लिए कहा है लेकिन तुम तो चिड़िया हो, रसोई कैसे पकाओगी ? मैना ने कहा - मैं आपको बताते जाऊंगी, आप वैसे ही बनाना | सुबह होते ही भाभियों नें रसोईघर की चाबी छोटेलाल को दे दिया और स्नान करने नदियाँ चलीं गईं | मैना जैसा कहती गई छोटेलाल वैसा ही करते गया और स्वादिष्ट भोजन पककर तैयार हो गया | सभी लोगों नें खाना, उंगलियाँ चाट -चाटकर खाए | लेकिन भाभियाँ नई देवरानी को देख नहीं पाए |

अगले दिन उन लोगों ने नई देवरानी को रसोई घर की पुताई करने को कहा - देवर जी, देवरानी जी से कहना, हमारे घर में नई बहु को रसोई घर की पुताई करनी पड़ती है नहीं तो रसोई भगवान नाराज हो जाते हैं | छोटेलाल जी भाभी ,कहकर अपने घर में चले आए | घर आकर उसने मैना को सारी बातें बता दिया | मैना ने कहा - आप चिंता मत करें, कई प्रकार के रंग बनाकर उसे रसोई में रखवा दीजिये, छोटेलाल को समझ नहीं आया | लेकिन मैना ने कहा रात होते ही मेरा पिंजरा खोल दीजियेगा | सभी के सो जाने के बाद छोटेलाल ने रात के अंधेरे में पिंजरा खोल दिया | मैना उड़ कर सीधे जंगल चली गई, और जंगल में अपने सभी साथियों से कहा - तुम लोग मेरी मदद करो, मैना ने सारी बातें अपने साथियों को बताया | सभी पक्षियां मैना के साथ उनके घर आ गए | और अपने छोटे-

छोटे पैरों को रंग में डूबो- डूबोकर दीवारों पर रखने लगे | कुछ ही समय में पूरे रसोई घर में खूबसूरत चित्रकारी बन गया | सभी पक्षी अपना काम करके जंगल चले गए |

सुबह भाभियों नें जब रसोई घर देखा तो उनके होश उड़ गए |आज भी भाभियाँ नई देवरानी को देख नहीं पाए | अब तो उसे देखने की उनकी ईच्छा और बढ़ गई | अगले दिन छोटेलाल ने मैना के लिए पिंजरे में खाने पीने का सामान रख दिया और अपने मित्रों के साथ फिर से रामायण मंडली चले गए | छोटेलाल जल्दी बाजी में पिंजरे में ताला लगाना भूल गया और चला गया | छोटेलाल रास्ते में जाते जाते सोंचने लगा | इस तरह से कब तक मैं यह बात सबसे छिपाता रहूंगा | इस बार यहाँ से लौटने के बाद मैं सारी सच्चाई घरवालों को बता दूंगा |

इधर शाम के समय पिंजरे से निकल कर मैना खिड़की में बैठी हुई थी तभी पीछे से बिल्ली आई और उसके ऊपर हमला कर दिया | मैना घायल होकर जमीन में गिर गई और कुछ ही देर में तड़प कर मर गई |

उस दिन महाशिवरात्रि का दिन था | आधी रात को भगवान शिव और पार्वती नगर भ्रमण को निकले हुए थे तभी माता पार्वती की नजर मैना

पर पड़ गई | पार्वती ने शिव जी से कहा - हे भोलेनाथ! यह मैना कितनी खूबसूरत है ये अगर स्त्री होती तो बहुत ही रूपवती होती | आप इसे कन्या के रूप में जीवन दान दे दीजिये | जब इसका मालिक इसे मरा हुआ देखेगा तो उसे बहुत दुख होगा | कृपा करके आप इसे जीवित कर दीजिए | पार्वती के बहुत जिद करने पर शिव जी ने उसे जीवित कर दिया , मैना ने शिव पार्वती को प्रणाम किया और शिव पार्वती अन्तर्ध्यान हो गए | मैना बहुत रूपवती कन्या बन गई | वह स्नान ध्यान करके घर के काम में लग गई | रसोई में स्वादिष्ट भोजन बनाकर सबको परोसा | भाभियाँ उनके रूप और गुण देखकर खुश हो गए | बूढ़े ससुर जी ने उसे आशीर्वाद दिया |

अगले दिन छोटेलाल जब घर आया तो भाभियों ने कहा देवर जी आपकी बीवी तो सच में अप्सरा है, तभी अब तक तुमनें उसे छिपाकर रखा था | छोटेलाल को कुछ समझ में नहीं आ रहा था उसनें सिर हिला कर बेमन से मुस्कुरा दिया और जल्दी से अपने कमरे में गया |

मैना को देखकर उसे यकीन नहीं हो रहा था, वह उल्टे पांव जाने लगा | मैना ने उसे हाथ पकड़ कर आसन पर बिठाया सारा वृतांत सुनाया | छोटेलाल और मैना अब सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे |

6.बरगद की भूतनी

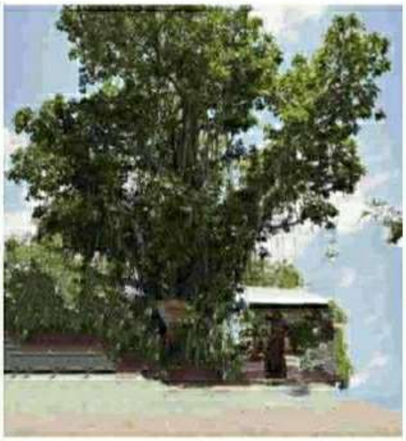

शाम के करीब छ: बजे रहे होंगे, अंधेरा नहीं हुआ था और न ही पूरी तरह ऊजाला था | चारों तरफ धुंधला -धुंधला सा लग रहा था लेकिन किसी को देखने से चेहरा स्पष्ट पहचाना जा सकता था | मैं गाँव के डाक्टर साहब के पास से अपने बाबा के लिए कुछ जरूरी दवाइयां लेकर वापस आ रही थी | कई दिनों से बाबा को बुखार आ रही थी ,

इसलिए रात होने से पहले मैं दवा लेने गई थी | डाक्टर का घर हमारे घर से काफी दूरी पर थी | रास्ते के बीच तिराहे में एक बड़ा सा नीम का पेड़ था | वहाँ से होकर तीन रास्ता निकलता था | वैसे तो वहाँ पर अक्सर चबूतरे में दो चार लोग बैठे ही रहते थे लेकिन पता नहीं क्यों वहाँ पर कोई भी नहीं था | जब मैं छोटी थी तो दादी मुझे चुड़ैल और भूतनी की कहानियाँ सुनाया करती थी | उस कहानी में एक बड़े से बरगद के पेड़ में भूतनी रहा करती थी वह बहुत लंबी और काली थी वह अपने पैरों में पायल पहनती थी | जब आसपास कोई भी नहीं रहता रास्ते सुनसान हो जाता तभी वह निकलती थी और उनकी पायल छन -छन बजती थी |

हालांकि रास्ते का वह पेड़ नीम का पेड़ था, लेकिन अभी हल्की रोशनी में उनकी पत्तियाँ स्पष्ट नहीं दिख रही थी और वह पेड़ और भी ज्यादा घना लग रहा था | जब मैंने वहाँ पर किसी को नहीं देखा तो डर के मारे मेरा हलक सूखने लगा | उसके नजदीक जाते-जाते
मैं अगल -बगल, ईधर- उधर देखने लगी और मन ही मन डर के मारे बजरंग बली का नाम जपने लगी |

शांत वातावरण था, अचानक मुझे पायल की आवाज सुनाई देने लगी | मेरी इतनी हिम्मत नहीं थी कि मैं पीछे मुड़ कर देखुँ | वह आवाज और मेरे नजदीक सुनाई देने लगी, अब तो डर के मारे मैं पसीने से लथपथ हो चुकी थी | मैंने हिम्मत जुटाया और तेजी से दौड़ लगाई | कुछ

दूरी पर एक पत्थर पर मेरा पैर टकराया और वहीं पर धड़ाम से गिर गई | मेरे हाथ और पैर के घुटने छिल गए | दवाई का पुड़िया दूर गिरकर बिखर गया और जिनको मैं पेंड की भूतनी समझ कर भाग रही थी उसी दूर के मामीजी ने मुझे दौड़ कर उठाया | दवाई को ढूंढकर मेरे हाथ में दिया और मुझे घर तक छोड़ने आई | मामीजी काम करके जल्दी जल्दी घर वापस आ रही थी, उसने मुझसे पूंछा कि तुमनें इतनी तेजी से दौड़ क्यूँ लगाई, मैंने उनसे कुछ नहीं बताया | अब जब भी मैं गाँव जाती हूँ तो उस नीम के पेड़ को देखकर चुड़ैल वाली कहानी याद आ जाती है | वह पेड़ आज भी उसी तरह हरे भरे और घने हैं |

7.डायन बहू

बहुत पुरानी बात है एक गाँव में एक किसान रहता था , किसान का एक बेटा था | किसान ने अपने बेटे की शादी बचपन में ही कर दिया था, जब बेटा सयाना हो गया, तो एक दिन उसनें अपने पत्नी से कहा - अरे भाग्यवान! हमारा बेटा अब सयाना हो चुका है | मैं बेटे के ससुराल जाकर बहू को लिवा लाता हूँ

किसान की पत्नी ने बेटे के ससुराल ले जाने के लिए मीठे पकवान बनाकर पोटली में बांध दिया | किसान अगली सुबह बेटे का ससुराल पहुँच गया | वहाँ से बहू को लेकर वह वापस आ

रहा था | ससुर आगे- आगे और बहू पीछे- पीछे चल रही थी | किसान की बहू के पास एक अनोखी विद्या थी वह जानवरों की भाषा समझ सकती थी | रास्ते में एक गाय ने, बां..! बां...! की आवाज लगाई, तो दूसरी तरफ़ से उसके बछड़े ने बां..!

बां....! की आवाज लगाई | बहू दोनों की भाषा समझ चुकी थी | उसनें प्रतिउत्तर में कहा- क्या करूँ, गऊ माता, मैं तो अपने ससुराल जा रही हूँ |

ससुर जी वहीं पर रूक गया और अपने बहू से पूंछा- क्या बात है बहू, तुम किससे बात कर रही हो?

बहू - रहने दीजिये ससुर जी मैं किसी से नहीं, अपने अंतर्मन से बात कर रही हूँ |

ससुर- नहीं ,नहीं बहू! तुम किसी से बात कर रही थी ?

तुम्हें बताना ही पड़ेगा | नहीं तो मैं यहाँ से एक पग भी नहीं चलूंगा ? ससुर जी के बहुत जिद करने पर बहू ने कहा - पिताजी, मैं पशु पक्षियों की भाषा समझती हूँ | अभी एक गाय अपने बछड़े से कह रही थी कि बेटा तुम इस पीपल पेड़ के नीचे आ जाओ! यहाँ जमीन पर खजाने से भरा एक स्वर्ण कलश है, तो दूसरी तरफ से बछड़े ने कहा कि माँ तुम यहाँ आ जाओ! यहाँ बरगद के नीचे दो स्वर्ण कलश है |ससुर जी को उसकी बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था |

दोनों ,उस पीपल के नीचे गाय के पास गए तो सच में वहाँ पर स्वर्ण कलश मिला | किसान ने उसे पोटली में बांधकर रख लिया फिर बछड़े के

जगह पर गए ,वहाँ पर भी उन्हें स्वर्ण कलश मिल गया | किसान ने उसे भी पोटली में बांधकर रख लिया | फिर ससुर -बहू घर पहुँच गए |

घर पहुंचते ही किसान की पत्नी ने बहू का स्वागत किया आरती उतारी और उसे अंदर ले गई | किसान ने धन अपने कोठरी में छुपाकर रख लिया |

एक दिन रात में बहुत तेज बारिश हो रही थी, और बिजली कड़क रही थी | सब अपने कमरे में सो रहे थे | उसी समय एक सियार की आवाज सुनाई दिया | किसान की बहू की नींद खुल गई, उसनें सियार की भाषा समझ लिया |

किसान की बहू ने अपने पति को देखा वह गहरी नींद में सो रहा था | बहू चुपचाप उठी

और दबे पाँव कमरे से बाहर निकल आई, वह सीधे नदी की ओर जाने लगी |

पत्नी के उठने के बाद किसान का बेटा भी जाग गया, और चुपके से पत्नी के पीछे-पीछे चल दिया | एक पेड़ के पीछे छुपकर अपनी पत्नी का कारनामा देखने लगा | किसान की बहु नदी के किनारे पहुंची | वहाँ पर एक सियार एक मुर्दे को बहते पानी से रोके हुए किनारे पर खड़ा था | किसान के बहु ने मुर्दे को पानी से खिंचकर बाहर निकाला और आसपास नजर दौड़ाया कोई दिखाई नहीं दिया तो उस मुर्दे को दांत से काटने लगी | किसान का बेटा डर के मारे थरथर कांपने लगा| वह अपने पत्नी के आने से पहले ही बिस्तर पर चादर ओढ़ कर सो गया | कुछ समय बाद बहु भी आकर सो गई | किसी भी तरह किसान के

बेटे ने रात काटी और जैसे ही सुबह हुआ , अपने माता -पिता से कहा कि - उसकी पत्नी डायन है और अब वह उसके साथ एक पल भी नहीं रह सकता |

उसनें अपने पिता से कहा कि उसे अभी उसके मायके पहुंचा दे | किसान की बहु समझ गई कि उसके पति ने रात की सारी कहानी देख लिया है |उसनें अपने आंचल में बांधे हुए मणि खोलकर अपने सास ससुर और पति को दिखाया और कहा कि वह रात में इसे लेने गई थी |आधी मरात को सियार ये कह रहा था कि कोई इस मुर्दे को बाहर निकाल कर इसके माथे की मणी निकालकर ले जाए और मुर्दा मुझे दे दे, मैं इससे अपना भूख मिटाऊंगा | उस समय मेरे पास कोई धारदार वस्तु नहीं था तो मैंने दांत

से काटकर उस मुर्दे के मस्तक से ये मणि निकाल लिया | मैं कोई डायन नहीं हूँ मैं पशु पक्षियों की भाषा समझती हूँ |

किसान के बेटे ने पत्नी से माफी मांगा, किसान ने स्वर्ण कलश बेचकर बहुत बड़ा महल बनवाया | सास ससुर और पति बहू से बहुत प्रेम करने लगे और राजा महाराजा की तरह ठाठ से रहने लगे |

8.दिव्य पुरुष

कल्लू बहुत ही गरीब था वह जंगल से कंदमूल फूल पत्ते इकट्ठा करते और उसी को बेंच कर अपना जीवन यापन करता था |एक दिन वह तेंदूपत्ता तोड़ने के लिए जंगल गया हुआ था |चलते -चलते उसे पता ही नहीं चला कि कब वह बहुत दूर निकल गया | कल्लू को बहुत जोरों की प्यास लगी थी, उसनें इधर -उधर नजरें दौड़ाई मगर दूर- दूर तक उसे कहीं भी पानी नजर नहीं आया | थक हारकर वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया | दोपहर का समय था जंगल में चारों तरफ़ सन्नाटा पसरा था | बीच- बीच में झिंगूर की आवाजें सुनाई पड़ रही थी |कल्लू को थकान के कारण नींद आने लगी, कल्लू ने सोंचा - थोड़ा झपकी

मार लेता हूँ उसके बाद पानी की तलाश करूँगा | जैसे ही उसनें आंख बंद किया तभी उसे टप-टप की आवाज सुनाई दिया |कल्लू समझ गया कि यह पानी की बूंदों की आवाज है | जो आसपास के किसी ऊँचे स्थान से बूंद- बूंद करके टपक रही है | वह उठा और आवाज कि दिशा में चलने लगा,कल्लू ने देखा कि एक बड़ा सा चट्टान के बीच से पानी की बूंदें टपक रही है| उसनें पत्तियों कि गठरी वहीं रख दिया और पानी पीने के लिए हाथ बढ़ाया कल्लू के हाथ लगाते ही आसपास के छोटे -छोटे पत्थर रंगीन और चमकदार बन गया | उसनें पहले भरपेट पानी पिया और सभी रंगीन पत्थरों को अपने गठरी में बांधकर घर लौट आया,, घर पहूँच कर उसनें पत्तियों को सुखा दिया और पत्थरों को एक गठरी

में बांधकर अपने सिरहाने रखकर सो गया | कल्लू गहरी नींद में सो रहा था तभी अचानक उसके कमरे में दिव्य रौशनी हुई और एक दिव्य पुरुष प्रकट हो गया |उसनें कल्लू से कहा- वत्स कल्लू उठो! कल्लू- प्रणाम भगवन्! दिव्य पुरुष ने कहा- वत्स तुम्हें मेरा एक कार्य करना पड़ेगा , तुम्हें जो रंगीन पत्थर प्राप्त हुआ है उन पत्थरों को लेकर यहाँ के सुनार के पास जाकर बेंच आओ! उससे तुम्हें बहुत सारा धन प्राप्त होगा और जिस स्थान पर तुमनें पानी पिया था उस स्थान पर एक तालाब और मंदिर का निर्माण कराओ | जिस दिन निर्माण कार्य पूर्ण हो जाएगा उस दिन मुझे स्मरण करना मैं तुम्हें फिर से दिखाई दूंगा |कल्लू की नींद खुली गई, सुबह होने में अभी एक प्रहर बांकी था | तभी से कल्लू

रंगीन पत्थरों को लेकर सुनार के घर पहुँच गया | सुनार ने उसे नोटों की गड्डी थमा दिया| कल्लू ने दिव्य पुरुष के कथन अनुसार जंगल के मध्य में तालाब खनन का कार्य आरंभ करवा दिया | कुछ ही दिनों में एक सुंदर मंदिर और तालाब दोनों बनकर तैयार हो गया | कल्लू ने दिव्य पुरुष का स्मरण किया, दिव्य पुरुष प्रकट हो गया | उसनें कल्लू को आशीर्वाद दिया और कहा मैं तुम्हारे नेक कार्य से बहुत प्रसन्न हूँ तुम्हारे इस कार्य से जंगल के कितने जीवजंतुओं को जीवन मिलेगा मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ कि तुम्हारे हाथों में एक दिव्य शक्ति रहेगा जिससे तुम किसी भी रोगी पीड़ित व्यक्ति को चंगा कर सकोगे और ऐसा कहकर दिव्य पुरुष मंदिर के भीतर प्रवेश करके अन्तर्ध्यान हो जाता है|

9.सन्नाटा

रात के सन्नाटे में दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनकर नीता की नींद टूट गई | उस समय घड़ी और मोबाइल का चलन नहीं था, इसलिए चांद और सूरज को देखकर समय का पता लगाया जाता था | नीता ने उठकर लालटेन की रोशनी तेज किया और दरवाजे की तरफ़ कदम बढ़ाया | जैसे ही उसने दरवाजा खोला सामने उनकी सहेलियों की टोली खड़ी थी |

नीता ने कहा- अरे तुम लोग ! इतनी रात को कैसे?

उनमें से सोनिया नाम की लड़की ने कहा - अरे ! क्या तुम भूल गई हो? कल ही तो हम सबने मिलकर ये तय किया था, कि आज से पूरे एक महीने तक हम नदी में कार्तिक स्नान करने जाएंगे वो देखो! चांद उत्तर दिशा की ओर है? मेरी दादी कहती है कि अगर चांद सीधे उत्तर दिशा में चमकने लगता है तो सुबह होने में केवल दो घड़ी ही शेष रहती है |

देखो! हम लोग तो महादेव के पूजन के लिए फूल, चावल, दूध, धूपबत्ती सभी सामग्री भी साथ लेकर आए हैं|

चलो! चलो! अपने कपड़े वगैरह रखो, नहीं तो दूसरे मुहल्ले कि लड़कियां हमसे पहले पहूँच जाएंगे |

नीता ने अपने कपड़े वगैरह रखी और माँ से कहा- माँ मैं सहेलियों के साथ कार्तिक स्नान करने नदी जा रही हूँ |

माँ आधी नींद में बोली- ठीक है, बाहर का दरवाजा अच्छे से बंद कर देना |

नीता और उनकी सहेलियाँ नदी की ओर चलने लगते हैं, नदी बस्ती से लगभग आधा किलो मीटर की दूरी पर थी | हालांकि चांदनी रात होने के कारण हर तरफ़ रोशनी फैली हुई थी लेकिन रास्ता पूरा सुनसान था | कहीं कोई व्यक्ति दिखाई नहीं दे रहा था | जैसे - तैसे सभी लड़कियाँ नदी के पास पहुंच गए | नीता ने कहा - देखो, अभी आधी रात है ! मैंने कहा था अभी समय

नहीं हुआ है फिर भी तुम लोग आ गए | हमें अभी नहीं आना था |

सोनिया- इतना समय हो चूका है फिर भी, सबेरा नहीं हो रहा है | सच में अभी आधी रात है , लेकिन दादी के बताए अनुसार ही तो मैंने तुम सबको जगाया है |

नीता - अब आ ही गए हैं, तो हम लोग नहा धोकर पूजा पाठ कर लेते हैं |

नीता के साथ सभी सहेलियों ने हां में हां मिलाया , लेकिन सब के सब डरे और सहमें हुए थे |

नदी के महादेव वाली घाट पर, एक बहुत बड़ा नीम का पेड़ था, उसी पेड़ के नीचे महादेव का

मंदिर था | नदी में स्नान करने के बाद लोग महादेव का पूजन करते हैं |

सभी लड़कियों ने अपना समान नीम के चबूतरे पर रख दिये उसके बाद पानी के नजदीक जाने लगे |

अचानक पेड़ के ऊपर से कोई अजीब सा चीज़ पानी में छलांग लगाया | सभी सहेलियाँ डर के मारे एक जगह एक साथ बैठ गए, उन्होंने नदी के भीतर उस जीव को देखा तो उनकी दोनों आंखें टार्च की तरह चमक रही थी |

उसने ऊंची आवाज में कहा- लड़कियों तुम लोग आधी रात को यहाँ क्यों आए हो, मेरे महादेव की सबसे पहले ,मैं पूजा करता हूँ, तुम लोग अपने घर जाओ! वरना!.......और...फिर वह अचानक से गायब हो गया | सभी लड़कियां बुरी

तरह से घबराकर एक दूसरे के तरफ़ देखने लगे | फिर एक साथ धीरे से उठे और दबे पाँव वहाँ से चलने लगे | वहाँ से आने के बाद नीता के घर सभी सहेलियाँ सुबह होने का इंतजार करने लगे | नीता के दादा जी सुबह के पांच बजे मवेशियों को चारा डालने उठा | नीता ने दादाजी को रात की सारी बातें बताई |

दादाजी ने कहा - बहुत समय की बात है इसी गाँव में समारू नाम का एक आदमी रहता था वह बहुत गरीब और निम्न जाति का था | लेकिन वह महादेव का भक्त था |

पहले के जमाने में गाँव का जो सबसे धनी आदमी रहता था गाँव में उसी का ही सत्ता चलता था | इस गाँव का सबसे धनवान जमींदार मानसिंह ने नदी किनारे स्थित उसी

महादेव मंदिर का निर्माण करवाया और भगवान की मूर्ति का स्थापना करवाया | लेकिन जमींदार साहब के पूजा करने से पहले ही समारू ने महादेव पर जल चढ़ा दिया | जमींदार साहब बहुत क्रोधित हुआ और समारू को जान से मरवा दिया |

समारू के मरने के बाद उसकी आत्मा नीम के पेड़ पर रहता है और आधीरात को सबसे पहले महादेव का पूजन करता है | रात के सन्नाटे में कोई भी व्यक्ति नदी के आसपास जाता है तो उसे या जो भी व्यक्ति उसके पूजा करने के पहले मंदिर चला जाता है उसकी आत्मा उसे जान से मार देता है | इसलिए ऐसे रात के सन्नाटे में कोई भी व्यक्ति उस मंदिर के आसपास नहीं जाते हैं | शायद तुम लोगों ने आज उसे ही देखा होगा | आज के बाद कभी भी

आधीरात के सन्नाटे में नदी के आसपास मत जाना |

दादाजी आपने ये बात हमें पहले क्यों नहीं बताया था?

दादाजी- मुझे क्या पता था कि तुम लोग आधीरात को नदी चले जाओगे?

लड़कियां- आज के बाद अब हम कभी नदी के किनारे नहीं जाएंगे, और सब लोग अपने- अपने घर चले गए |

10.परियों का देश

गर्मी का दिन था, भीषण गर्मी पड़ रही थी | आज मोनू ने शाम का खाना जल्दी ही खा लिया और दरी उठाकर अपने छत पर सोने चला गया | अंधेरी रात थी, आसमान में असंख्य तारे टिमटिमा रहे थे, मोनू तारों को देख रहा था | कोई छोटा कोई बड़ा, कोई बहुत चमकीला , कुछ

ही समय में सोने चांदी से जड़ा हुआ एक उड़नखटोला नीचे आया और मोनू को उड़ा कर ले गया | आसमान में उड़ते -उड़ते वह एक अनोखी दुनिया में चला गया | जहाँ सभी लोगों के पंख लगे हुए थे, लेकिन मजे की बात ये थी कि यहाँ मोनू के सभी दोस्त रिंकू, पिंकू, टिंकू पहले से ही मौजूद थे | रिंकू, मोनू को देखते ही अपने सुनहरे पंखों से उड़ते हुए उसके पास आए |

अरे! मोनू तुम आ गए! सफ़र में तुम थक गए होंगे, चलो पहले हमारे साथ स्नान कर लो | रिंकू उसे एक बहुत बड़ा खूबसूरत स्वीमिंग पुल में ले गया | मोनू ने देखा - अरे ये तो चाकलेट से बना हुआ है, चाकलेट वाली पानी चाकलेट का

नाव | मोनू ने खूब मस्ती किया, जी भर कर चाकलेट खाए |

नहाने के बाद सभी दोस्त मिलकर खाना खाने चले गए | वहाँ एक परी आई उसनें अपनी छड़ी घुमाई, तो पूरा टेबल मिठाइयों से भर गया | रसगुल्ले, जलेबी, चमचम तरह -तरह की मिठाईयाँ | अब सभी दोस्तों ने जी भरकर मिठाईयां भी खा लिये | तभी एक बहुत खूबसूरत परी एक सुनहरे पंख लेकर आई और मोनू के हाथों में लगा दिया | हमारे दुनिया में जो भी आता है उसे यह भेंट दिया जाता है | देखो एक-एक पंख मैंने तुम्हारे दोस्तों को भी दिया है | मोनू ,अब जब भी तुम्हें परियों के देश में आने का मन करे उड़ते हुए आ जाना | तभी अचानक मोनू के हाथों को जोर से मच्छर ने काटा, मोनू

ने जोर से अपने हाथों को झटककर मच्छर को मारना चाहा तो उसे लगा कि उसका पंख टूटने वाला है | मोनू जोर- जोर से चिल्लाने लगा अरे! मेरा पंख मेरा पंख, कहाँ चला गया मेरा पंख और वह उठकर बैठ गया | मम्मी भी उसके साथ जाग गई, क्या हुआ मोनू? अभी आधी रात है बेटा चलो सो जाओ! मोनू समझ गया कि वह सपने में परियों की देश में चला गया था | मोनू मम्मी के आंचल से अपना चेहरा ढंककर फिर से सो गया |

11.वन की देवी

एक गाँव में,सोनू और मोनू दो मित्र रहते थे | दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते थे | साथ- साथ खेलते थे, कहीं भी जाते तो साथ ही जाते थे एक दिन दोनों मित्र घुमने निकले,चलते-चलते वे जंगल

की तरफ बहुत दूर निकल गए | रास्ता सुनसान था ,न कोई इंसान न कोई जानवर | झिंगुर और कीड़े- मकोड़ों की आवाजें सुनाई दे रही थी |तभी जंगल में अचानक किसी की रोने की आवाज सुनाई दी |

पास जाकर उन्होंने देखा कि एक सुंदर सी लड़की अपने चेहरे पर हाथ रख कर जोर- जोर से रो रही है|

मोनू ने उनसे पूंछा! आप क्यों रो रही है ? इस सुनसान जंगल में आप अकेले हैं और क्यों रो रहीं हैं ?

लड़की ने कोई उत्तर नहीं दिया |

इस बार मोनू ने उसे चुप कराते हुए कहा- आपको क्या तकलीफ है?

कृपा करके हमें बताइये, हम आपकी मदद करना चाहते हैं |

लड़की ने कहा जाओ! बच्चों घर लौट जाओ! तुम लोग अभी बच्चे हो, मेरी मदद नहीं कर सकोगे |सोनू और मोनू कुछ देर वहीं पर खड़े होकर सोचने लगे, हमें इनसे क्या मतलब? हम लौट जाते हैं |

फिर सोनू और मोनू सोचने लगे-

नहीं! नहीं!

हमें इस तरह से किसी मुसीबत में फंसे इंसान को छोड़कर नहीं जाना चाहिए |

सोनू- मोनू- आप हमें जब तक नहीं बताएंगे, तब तक हम यहाँ से घर वापस नहीं जाएंगे |
कृपया हमें बताइये, आप क्यों रो रही है ?

लड़की ने कहा- ठीक है,चलो मेरे साथ!
ऐसा कहकर , सोनू और मोनू को एक कूंए के पास ले आई और कहा- इस कूंए में मेरी बेशकीमती हीरे की अंगूठी गिर गई है और मैं उसे निकाल नहीं पा रही हूँ |अगर अंगूठी के बिना मैं घर जाऊंगी तो मेरी माँ मुझे बहुत मारेगी |कूंआ बहुत गहरा और अंधेरा है|

सोनू ने कहा- आप चुप हो जाइए हम आपकी मदद करेंगे | ऐसा कहकर सोनू और मोनू झट से एक पेड़ से लिपटा हुआ बेल लेकर आए |बेल को कूंए में लगे लोहे के राड से बांधकर-दोनों एक के बाद एक नीचे उतर गए परंतु उन्हें कोई भी अंगूठी दिखाई नहीं दिया|

अंधेरे कूंए में दोनों का दम घुटने लगा. सोनू-और मोनू को कुछ समझ नहीं आ रहा था |

दोनों हाथ जोड़कर भगवान से प्रार्थना करने लगे| तभी वही लड़की अचानक कूंए के अंदर आ जाती है और वनदेवी के रुप में प्रकट होकर कहती है – सोनू और मोनू , तुम दोनों बहुत नेकदिल और

ईमानदार हो |मैं वन की देवी हूँ, मैं तुम दोनों से बहुत प्रसन्न हूँ |

वनदेवी दोनों को एक- एक हीरे की अंगूठी देती है और कहती है-

जाओ! इस अंगूठी को अपने उंगली में धारण करोगे, तो तुम दोनों को अद्भुत शक्ति प्राप्त होगी, और जो भी लाचार, असहाय है दुनिया में उन सबकी मदद करो |

ऐसा कहते ही वह अंतर्ध्यान हो जाती है, दोनों मित्र घर लौट आते हैं ,और उस दिन से लोगों की मदद करने लगते हैं|

12.खंडहर की चुड़ैल

आज दोपहर से ही पता नहीं शीला के मन में घबराहट सी हो रही थी | वह बार- बार बाहर निकलकर गलियों की तरफ़ देख रही थी | कभी

अंदर जाती कभी बाहर आती, उसकी बेचैनी को देखकर वरूण के पापा ने कहा- क्या बात है शीला, क्यों इतनी बेचैन हो? शीला- देखो न वरूण के पापा, ये वरूण भी आजकल कितना बदमाश हो गया है, मैं रोज इन्हें डांटती हूँ, समझाती हूँ कि शाम होने के पहले घर आ जाया करो कहकर, फिर भी ये लड़का नहीं मानता | शाम के छः बज चुके हैं अभी तक इसे घर की याद नहीं आई है |

वरूण के पापा बोले- क्या शीला तुम भी बहुत घबरा जाती हो, बच्चे अक्सर खेलते-खेलते पास के जंगल में दूर निकल जाते हैं आ रहे होंगे , उनके दोस्त भी तो उसके साथ हैं वरूण अकेले तो नहीं है | कुछ समय बाद, शीला से रहा नहीं गया, और

फिर अपने पति से कहने लगी - वरूण के पापा, अब अंधेरा भी होने वाली है आप उनके दोस्तों के घर जाकर पता करो न ,कि वे लोग घर आ गये हैं या नहीं | शीला के बार-बार कहने पर वरूण के पापा, वरूण के दोस्त संजय के घर गए | संजय तो अपने घर पर ही था , वरूण के पापा को देखकर संजय ने पूछा क्या बात है अंकल आप अचानक..... |

संजय के पूछने से पहले ही वरूण के पापा ने कहा - संजय, वरूण कहाँ है? सुबह तो वह तुम्हारे साथ ही गया था न, तुम घर पर हो और वरूण अभी तक घर नहीं आया है | रात होने वाली है तुम्हारी

आंटी घबरा रही है | वरूण की बात सुनकर संजय को आश्चर्य हुआ कि वरूण घर नहीं आया है | उसनें कहा- अंकल, वरूण तो मेरे साथ था ही नहीं, वह हमारे साथ मैच खेलने जाने के लिए आया जरूर था लेकिन....

वरूण के पापा- लेकिन... क्या.... ?

संजय- लेकिन वह अचानक सिर दर्द हो रहा है ऐसा कहकर आधे रास्ते से ही वापस घर लौट गया था | अब वरूण के पिता को भी वरूण का फिक्र होने लगा |

वरूण के पापा घर लौट आया, घर आकर उसनें सारी बातें शीला को बताई | शीला घबराहट और डर के मारे रोने लगी | रात हो चुकी

थी, चिंता के मारे दोनों बेचैन थे वरूण के पापा ने उनके सभी दोस्तों के घर पर फोन करके पूंछा लेकिन किसी को उसके बारे में जानकारी नहीं थी |शीला और वरूण के पापा को इस तरह से बेचैन देखकर उसके आसपड़ोस के लोग भी इकट्ठे हो गए | तभी उनके पड़ोस के एक छोटे से बच्चे ने शीला से कहा- आंटी ,आंटी··· मैंने वरूण भैया को कल दोपहर को रोड के किनारे एक खंडहर में जाते हुए देखा है | मैं कल दोपहर को किराने के दुकान से मसाले खरीद कर घर वापस आ रहा था तभी मैंने वरूण भैया को देखा ! मैंने उसे भैया कहकर आवाज भी दिया लेकिन वरूण भैया ने मेरी तरफ नहीं देखा |

शीला ने बच्चे से कहा- बेटा क्या तुम हमें उस खंडहर तक ले चलोगे?

बच्चे ने कहा- हाँ आंटी…बिल्कुल! चलिए मैं आप सबको उस खंडहर तक ले चलता हूँ | सभी लोग बच्चे के साथ खंडहर की तरफ़ चलने लगते हैं | रात के बारह बजे चुके होते हैं | खंडहर के पास पहुंचते ही सभी के मन में तरह-तरह की सवाल उठने लगते हैं | खंडहर के आसपास अंधेरा और सन्नाटा पसरा होता है| खंडहर के भीतर जाने की किसी की हिम्मत नहीं हो रही थी | तब वरूण के पापा और एक बुजुर्ग व्यक्ति मशाल लेकर खंडहर के भीतर चले जाते हैं | बांकी लोग खंडहर के बाहर दोनों के आने की

प्रतिक्षा करते रहते हैं| भीतर जाने के बाद वहाँ का नज़ारा देखकर वरूण के पापा के पैरों तले जमीन खिसक गई | वरूण जमीन पर बेहोश पड़ा हुआ है और एक औरत अपने हाथों में आटा लेकर उसके चारों तरफ गोला बना रही है | उसके बाल खुले हुए हैं चेहरे पर सिंदूर पुते हुए हैं, और जोर जोर से मंत्र उच्चारण कर रही है | वरूण के पापा यह देखकर बुरी तरह से डर जाता है| उसके साथ में गए बुजुर्ग व्यक्ति को बुरी ताकत से लड़ने की शक्ति प्राप्त थी| वह अपने साथ कुछ जड़ी-बूटी और गंगाजल लेकर गया हुआ था | बुजुर्ग ने वरूण के पापा को गंगाजल का शीशी देकर कहा, मैं जब तुम्हें इशारा करूँगा तो यह गंगाजल वरूण

और उस चुड़ैल के ऊपर छिड़कना ऐसा कहकर वह अपने हाथों में एक जड़ी लेकर कुछ मंत्र उच्चारण करता है और पीछे से उस चुड़ैल के ऊपर भभूति छिड़कता है तभी वरूण के पापा भी गंगाजल छिड़क देता है| वह चुड़ैल जोर से चिल्लाती है कौन है? जिसने मेरी साधना को भंग किया है, मैं तुम्हें जिंदा नहीं छोड़ूंगी इस लड़के के साथ तुम्हें भी बली चढ़ाऊंगी | ऐसा कहते हुए जोर से चिल्लाती है और काली परछाईं बनकर हवा में गायब हो जाती है | बुजुर्ग जल्दी से वरूण के मुंह में कुछ जड़ी-बूटी का रस टपकाता है और उसके ऊपर गंगाजल छिड़कता है | वरूण उठकर

बैठ जाता है | फिर तीनों उस खंडहर से बाहर आ जाते हैं | शीला वरूण को गले से लगा लेती है|

सुरेखा नवरत्न, सहायक शिक्षक
गृह जिला- जांजगीर -चांपा
कार्यस्थल- शा. प्रा. शाला- छिर्रा
विकास खंड- बिलाईगढ़
जिला- बलौदाबाजार (छ.ग.)
मो. नं. 7611172332.